

वीर नर्मद दि ण गुजरात वि वि ाल, सुरत
एम.ए. हिदी
सेमे टर-1 (Revised)
(जून 2010-11 और 2011-12 के वष के लिए)
भाग-१

प - 1 ाचीन एवम् म यकालीन का

Core Course-01

तावना: हदी का आ दकालीन साहि य परवत काल को भावित करने म स य व स म भूमिका रही है। इस काल के अ ययन के बिना कसी भी काल का वा तविक मू यांकन संभव नह है। भि काल का का लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन वर लेकर आया। इसने भारत क भावना मक एकता और सां कृतिक परंपरा को सुरि त रखा है। अतः इनका अ ययन समाज, सं कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. कबीर-वाणी पीयूष संपा.डॉ. जयदेव सह (काशक-वि वि ालय काशन, वाराणसी)
2. जायसी- प ावत, संपा.आचार्य रामचं शु ल (नागमती विरह तथा सिंहल िप ख ड)
(नागरी चा रणी सभा, वाराणसी)

अ ययन के लिए निर्धा रत े -

ईकाई-1 1. भि काल: हदी साहि य का सुवर्ण युग।

2. निर्गुण भि -धारा क विशेषताएँ।

ईकाई-2 1. हदी सूफ का परंपरा।

2. हदी सूफ का परंपरा म जायसी का थान।

ईकाई-3 कबीर-वाणी पीयूष

1. कबीर: जीवन प रचय।

2. कबीर का का सामाजिक और ांतिकारी प : सम योजन।

3. कबीर का सम वयवादी दृ िकाण।

4. कबीर का रह यवाद और ेमानुभूति।

5. कबीर-का के विषय।

6. कबीर-का के सै ांतिक और दार्शनिक आधार।

7. कबीर-का का कला मक प ।

ईकाई-4 प ावत

1. 'प ावत' म इतिहास और क पना।

2. 'प ावत': बंधा मकता, ेमाभि ंजना, रह यवाद, अ योि अथवा समासोि और दार्शनिकता।

3. 'प ावत' म विरह-वर्णन, कृति-चि ण और का -सौ वा।

अंक विभाजन:

3 आलोचना मक -ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 ट पणी व ससंदर्भ ा या का (हरेक पु तक से एक-एक) ईकाई 3 और 4 पर आधा रत (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. कबीर-डॉ.हजारी साद िवेदी (राजकमल काशन)
2. कबीर-संपा.विजये ातक
3. हिदी साहि य का आ दकाल-डॉ.हजारी साद िवेदी
4. भारतीय ेमा यान का -डॉ. ह रकांत िवा तव
5. महाकवि जायसी और उनका का -डॉ.इकबाल अहमद
6. जायसी-एक नई दृि-डॉ.रघुवंश (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
7. कबीर: एक नई दृि-डॉ.रघुवंश (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
8. कबीर के आलोचक-डॉ.धर्मवीर (वाणी काशन, द ली)
9. हिदी के ाचीन कवि-डॉ. ा रका साद स सेना (विनोद पु तक मं दर, आगरा)
10. हिदी साहि य का इतिहास-आचार्य रामचं शु ल (नागरी चा रणी सभा, काशी)

तावना- कसी भी रचना क विशि ता एवम् मू यबोध के उा टन के लिए का शा और साहि यालोचन का न अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृि मिलती है जिसके आधार पर साहि य के मर्म और मू य क परख हो सकती है। सामाजिक-सां कृतिक प रवेश के साथ रचना का आ वाद करने तथा रचना को उसके सम ता म समझने के लिए भारतीय का शा का अ ययन आव यक है।

अ ययन के लिए निर्धा रत े -

ईकाई-1 रस-सि ंत-रस का व प, रस-नि प, रस के अंग, साधारणीकरण, सृदय क अवधारणा।

ईकाई-2 अलंकार-सि ंत-मूल थापनाएँ, अलंकार का वग करण।

रीति-सि ंत- रीतिक अवधारणा, का -गुण, रीति एवम् शैली, रीति-सि ंत क मुख थापनाएँ।

ईकाई-3 व ेि -सि ंत-व ेि क अवधारणा, व ेि के भेद, व ेि एवम् अभि ंजनावाद।

वनि-सि ंत - वनिका व प, वनि-सि ंत क मुख थापनाएँ, वनिका के मुख भेद, गुणीभूत ंय, चि का ।

औचि य-का - मुख थापनाएँ, औचि य के भेद।

ईकाई-4 हिदी कवि-आचाय का का शा िय चितन-ल ण-का -परंपरा एवम् कवि-शि ा।

।वहा रक समी ा - कसी का ंश क वविवेक के अनुसार समी ा।

अंक-विभाजन-

3 आलोचना मक - ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 ।वहा रक समी ा तथा ट पणी पर आधा रत- ईकाई 4 से (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. रस-सि ंत-डॉ.नगे (नेशनल पलि शग हाउस, द ली)
2. रस-सि ंत क दार्शनिक और नैतिक ा या-डॉ.तारकनाथ वाली (विनोद पु तक मं दर, आगरा)
3. भारतीय का शा क भूमिका-डॉ.नगे
4. अभिनव का रस विवेचन-नगीनदास पारेख
5. समी ा लोक-भगीरथ दीित
6. भारतीय का शा क परंपरा-डॉ.नगे
7. साहि य का -विमर्श-डॉ.राममू त िपाठी (वाणी काशन, द ली)
8. भारतीय एवम् पा ाय का सि ंत-डॉ.गणपतिचं गु (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
9. हिदी आलोचना का विकास-नंद कशोर नवल
10. का के त व-देवे नाथ शर्मा (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)

प -3 योजनमूलक हिदी

Core Course-03

तावना- भाषा के योजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आव यकता और जीवन- वहार से है और ि परक होकर भी जो समाज-सापे सेवा मा यम के प म यु होती है। उ र आधुनिक काल म जीवन और समाज क विभि आव यकता और दायि व क पू त के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभि वहार े म उपयोग क जानेवाली योजनमूलक हदी के विविध आयाम का अ ययन अति आव यक है। इससे रा भाषा तथा राजभाषा का सं कार भी दृढ होगा।

अ ययन के लिए निर्धा रत े -

ईकाई-1 कामकाजी हिदी

1. हिदी के विभि प- सर्जना मक भाषा,संचार भाषा, राजभाषा, मा यम भाषा, मातृभाषा।
2. कार्यालयी हिदी (राजभाषा) के मुख कार्य- ा पण, प -लेखन, संेपण, प लवन, ट पण।
3. पा रभाषिक श दावली- व प एवम् मह व, पा रभाषिक श दावली- निर्माण के सि ंत।
4. ान-वि ान के विभि े क पा रभाषिक श दावली।

ईकाई-2 हिदी कं यू टग

5. कं यूटर- प रचय, प रेखा, उपयोग तथा े वेब पलिशिग का प रचय।

6. इंटरनेट संपर्क उपकरण का प रचय, कार्या मक रख-रखाव एवम् इंटरनेट समय मित यिता के सू ।
7. इंटरनेट ए स लोड अथवा नेट केप।
8. लिंक, आउजिंग, ई-मेल भेजना- आ करना, हिंदी के मुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग अपलोडिंग, हिंदी साँ टवेयर, पैकेज।

ईकाई-3- प का रता

9. प का रता- व प एवम् विभि कार।
10. हिंदी प का रता: उ व और विकास ।
11. मुख ेस कानून एवम् आचार संहिता।

ईकाई-4 समाचार-लेखन

12. समाचार-लेखन-कला।
13. संपादन के आधारभूत त वा।
14. आवहार क र्फ शोधन।
15. शीर्षक क संरचना, लीड, इं े एवम् शीर्षक-संपादन।
16. संपादक य-लेखन।
17. पृ -स आ।
18. सा आ कार, प कार वार्ता एवम् ेस- बंधन।

अंक विभाजन-

3 आलोचना मक – ईकाई 1,2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 ट पणी का – ईकाई 1-2-3 से एक और ईकाई 4 से एक (दो ट पणियाँ) (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. योजनमूलक हदी: आसंगिकता एवम् प रट्ट य-डॉ.सु.नागल मी (जवाहर पु तकालय, मथुरा)
2. योजनमूलक हदी- कमल कुमार बोस (लासिकल पल्लि शग क पनी, द ली)
3. हदी प का रता-कृ ण बिहारी मि (भारतीय ानपीठ, द ली)
4. योजनमूलक हदी:संरचना एवम् अनु योग-डॉ.राम काश एवम् डॉ दनेशगु (राधाकृ ण काशन, द ली)
5. योजनमूलक हदी और प का रता-डॉ. दनेश साद सह (वाणी काशन, द ली)
6. योजनमूलक हदी-विनोद गोदरे (वाणी काशन, द ली)
7. योजनमूलक हदी:सि ांत और योग-दंगल झा टे (वाणी काशन, द ली)
8. राजभाषा शासनिक श दकोश-डॉ.एस. यागी (भारत भारती, द ली)
9. कार्यालयीय हिंदी-डॉ.विजयपाल सिंह
10. आ पण, ट पण और र्फ पठन-डॉ.भोलानाथ तिवारी (वाणी काशन, द ली)
11. योजनमूलक हदी के के विविध आयाम-माया सह, सि ेर का यप (जयभारती काशन, इलाहाबाद)
12. कं यूटर के भाषिक अनु योग-विजयकुमार म हो आ
13. कं यूटर और हिंदी-डॉ.ह रमोहन
14. राजभाषा हिंदी- कैलाशचं भा टया (वाणी काश, द ली)
15. कं यूटर-डॉ.सी.एल.गर्ग
16. प का रता:विविध विधाएँ-डॉ.राजकुमारी रानी (जयभारती काशन, इलाहाबाद)
17. संपादन-कला-डॉ.ह रमोहन
18. रेडियो और दूरदर्शन प का रता-डॉ.ह रमोहन
19. आधुनिक वि ापन और जन संपर्क-डॉ.तारेश भा टया
20. समाचार फ चर लेखन एवम् संपादन कला--डॉ.ह रमोहन
21. ेक के बाद-सुधीश पचौरी
22. संपादन कला एवम् र्फ पठन-डॉ.ह रमोहन
23. प का रता म अनुवाद क सम याएँ-डॉ.भोलानाथ तिवारी

प -4 आधुनिक हिंदी का

Elective Course-01

तावना- आधुनिक हिंदी का नवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरता आ। उसी सव शती के उ र्णाम इसम नवीन संवेदनाएँ, भावनाएँ तथा नवीन विचार अभि ए है। इसक विविध धाराएँ हैं। इसलिए संवेदना तथा ान ितिज के वि तार के लिए इसका अ ययन अ यंत आव यक तथा ासंगिक है।

1. साकेत - मैथिलीशरण गु (संदर्भ के लिए नवम् सर्ग)
(काशक-साहि य सदन, झाँसी, मू य-60)
2. सूर्यकांत िपाठी निराला - तुलसीदास (राजकमल काशन, नई द ली)

अ ययन के लिए निर्धारित -

ईकाइ-1 1. विवेदीयुगीन का क मुख विशेषताएँ।

2. विवेदीयुग के तिनिधि कवि।

ईकाइ-2 1. छायावादी का ःश द, प रभाषाएँ एवम् विशेषताएँ।

2. छायावाद का ऐतिहासिक मह व।

ईकाइ-3 साकेत

1. रा िय चेतना के कवि मैथिलीशरण गु ।

2. 'साकेत': सां कृतिक आधार, युगीन आदर्श अंतर्व तु एवम् वै णव भि -भावना।

3. उ मला, राम और कैकेया के च र , जीवन-दर्शन तथा महाका व।

4. नवम् सर्ग का का -वैभव।

ईकाइ-4 तुलसीदास

1. निराला क का -या ा के विभि चरण।

2. निराला का जीवन-दर्शन और रा िय- चतन।

3. छायावाद और निराला।

4. 'तुलसीदास': सां कृतिक पृ भूमि पर आधा रत चतन- धान दार्शनिक का ।

5. 'तुलसीदास' का क ऐतिहासिक पृ भूमि।

6. 'तुलसीदास' का का -सौ व।

अंक विभाजन:

3 आलोचना मक -ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 ट पणी व ससंदर्भ ा या का ईकाई 3 और 4 पर आधा रत (हरेक पु तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

3. मैथिलीशरण गु - संपादक-नंद कशोर नवल (राजकमल काशन, नई द ली)
4. साकेत: एक अ ययन-डॉ.नगे (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई द ली)
5. निराला-डॉ.रामविलास शर्मा (राधाकृ ण काशन, नई द ली)
6. कवि निराला-नंददुलारे वाजपेयी
7. निराला क साहि य साधना-डॉ.रामविलास शर्मा (राजकमल काशन, नई द ली)
8. निराला का का अ ययन-भगीरथ मि (राधाकृ ण काशन, नई द ली)
9. निराला-डॉ.इ नाथ मदान
10. निराला और मुि बोध: चार ल बी कविताएँ-नंद कशोर नवल (राधाकृ ण काशन, नई द ली)
11. साकेत: एक अ ययन-दानबहादुर पाठक (विनोद पु तक मं दर, आगरा)

अथवा

प -4 छायावाद

Elective Course-01

तावना- छायावाद हिंदी के आधुनिक काल क कविता क एक नूतन और मौलिक उपलधि है। इसम कविय ने अपनी वानुभूतिक अभि िक है। ेम, कृति और अ या म इसके मु य विषय रहे हैं। शैली इसक नवीन है। साद, पंत, महादेवी वर्मा और निराला इसके मील- तंभ हैं। छायावाद के बिना हम इस शता दी क धड़कन को समझने म असमर्थ ह गे। अतः इसका अ ययन-मनन व त ही ासंगिक एवम् अनिवार्य है।

1. साद - आँसू (काशक- राजकमल काशन, द ली)

2. पंत - प लव (काशक- राजकमल काशन, द ली)

नि लिखित कविताएँ-

प लव, मोह, मौन निमं ण, वसंत ी, व , निर्झरता, शिशु, बादल, वि णि, निशा-छवि और याचना।

अ ययन के लिए निर्धा रत े -

ईकाई-1 1. छायावाद: श द, प रभाषाएँ एवम् मुख विशेषताएँ।

2. छायावाद के वर्तक।

ईकाई-2 1. छायावाद के मुख कवि।

2. कहानी, उप यास, नाटक और आलोचना पर छायावाद का भाव।

ईकाई-3 ऑसू

1. कवि जयशंकर साद क का -या ।।

2. 'ऑसू': एक वेदना-का ।

3. छायावाद क एक मुख रचना: 'ऑसू'।

4. 'ऑसू' का आल बन तथा का - पा।

5. 'ऑसू' म कृति-चि ण।

6. 'ऑसू': भाव-प और कला-प ।

ईकाई-4 प लव

1. पंत क का -या ।।

2. छायावाद और पंत।

3. 'प लव' म कृति-चि ण।

4. पंत क कविता का भाव और कला-प ।

अंक विभाजन:

3 आलोचना मक -ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 ट पणी व ससंदर्भ णा या का, ईकाई 3 और 4 पर आधा रत (हरेक पु तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. छायावाद-डॉ.नामवर सिंह (राजकमल काशन, नई द ली)
2. छायावाद के आधार तंभ-गंगा साद पा डेय (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
3. सुमि तन्दन पंत-आनंद काश दी णि त
4. पंत क का -भाषा-डॉ.कांता पंत (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
5. जयशंकर साद-आ.नंददुलारे वाजपेयी (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)

प -5 विशि युग वृि का अ ययन

आ दकाल

Multi Disciplinary Course-03

हदी साहि य क उचित जानकारी के लिए आ दकाल का अ ययन अनिवार्य है।

अ ययन के लिए निर्धा रत े -

ईकाई-1 अप ंश: अर्थ और व प, साहित्यिक भाषा के प म अप ंश का विकास

अप ंश का - बंधा मक, मु क, नीति, वीर और ंगार का -धाराएँ

अप ंश और हदी का का संबंध

ईकाई-2 आ दका क साहित्यिक वृति-ऐतिहासिक, ंगा रक एवम् लौ कक का ।

आ दका क शि पगत विशेषताएँ-कथानक-शैलियाँ एवम् ढयाँ, गेयता, का प एवम् भाषा।

ईकाई-3 1.पृ वीराज रासो: कयमास-वध समय सं.माता साद गु (लोकभारती काशन)

1.कवि चंद बरदाई-प रचय।

2.'पृ वीराज रासो' क णामाणिकता।

3.'पृ वीराज रासो' : आ दकालीन मुख रचना।

4.'पृ वीराज रासो' : व र्य-विषय।

5.'कयमास-वध' म इतिहास और क पना।

6.'कयमास-वध' : का -स दर्य।

ईकाई-4 2.ढोला मा रा दूहा –नरपति ना ह

1. 'ढोला मा रा दूहा' : एक े मु का
2. 'ढोला मा रा दूहा' म ँगार-चि ण
3. 'ढोला मा रा दूहा' : स दर्य-चि ण
4. ढोला और मालवणी।
5. 'ढोला मा रा दूहा' म मारवणी का विरह-वर्णन
6. 'ढोला मा रा दूहा' : का -सौ वा

अंक विभाजन-

- 3 आलोचना मक -ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)
1 ट पणी व ससंदर्भ ा या का, ईकाई 3 और 4 पर आधा रत (हरेक पु तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. हिदी साहि य का इतिहास-आचार्य रामचं शु ल (नागरी चा रणी सभा, काशी)
 2. हदी साहि य का आ दकाल-डॉ. हजारी साद िवेदी (वाणी काशन, इलाहाबाद)
 3. हदी के विकास म अप ंश का योग-डॉ. नामवर सिंह (लोकभारती)
 4. पृ वीराज रासो: भाषा और साहि य-डॉ. नामवर सह (राजकमल काशन, द ली)
 5. पुरानी हदी-चं धर शर्मा गुलेरी (नागरी चा रणी सभा, काशी)
 6. संि पृ वीराज रासो-संपा.ह. िवेदी-डॉ. नामवर सह (साहि य भवन, इलाहाबाद)
-

M.A. DEGREE COURSE HINDI

1ST SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 1 पचीन एवम् म यकालीन का Core Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -2 भारतीय का शा एवम् साहि यालोचन Core Course-2	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER- 3 योजनमूलक हिदी Core Course-3	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
4	PAPER -4 आधुनिक हिदी का Elective Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER -4 छायावाद Elective Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
6	PAPER- 5 आ दकाल Multi Disciplinary Course-1	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02
8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each Semester. Four Hours for each course per week Total teaching hours per week=20				Each Day 5 th Hour can be used for seminar/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नर्मद दि ण गुजरात वि वि ालय, सुरत
एम.ए. हिदी
सेमे टर-2 (Revised)
(जून 2010-11 और 2011-12 के वष के लिए)
भाग-१

प - 6 ाचीन एवम् म यकालीन का

Core Course-04

तावना: भि काल का का लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन वर लेकर आया। इसने भारत क भावना मक एकता और सां कृतिक परंपरा को सुरि त रखा है। तो रीतिकालीन का अपनी कला मक अभि ि म बेजोड रहा है। अतः इनका अ ययन समाज, सं कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. तुलसीदास- कवितावली-संपा.लाला भगवान दीन
(काशक- लोकभारती, इलाहाबाद)
2. घनानंद-कवि , संपा. आचार्य वि नाथ साद मि (१ से २५ कवि)
(संजय बुक सटर, वाराणसी)

अ ययन के लिए निर्धारित -

ईकाई-1 भि काल: सगुण भि -धारा और तुलसीदास।
रामभि -धारा: उ व और विकास

ईकाई-2 रीतिकालीन का -धाराएँ।
रीतिकालीन व छंद का धारा म घनानंद का थान।

- ईकाई-3 तुलसीदास**
1. तुलसी का जीवन-वृ ।
 2. 'कवितावली': का - व पा।
 3. 'कवितावली': व तु-विधान।
 4. 'कवितावली' का उ रकांड।
 5. 'कवितावली': भाव और कला-प ।

- ईकाई-4 घनानंद-कवि**
1. घनानंद: जीवन-प रचय और रचनाएँ।
 2. 'ेम क पीर' के कवि घनानंद।
 3. घनानंद क भि -भावना।
 4. घनानंद के का क विशेषताएँ।

अंक विभाजन:

- 3 आलोचना मक -ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)
1 ट पणी व ससंदर्भ ा या का ईकाई 3 और 4 पर आधा रत (हरेक पु तक से एक-एक) (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. तुलसी-संपा. उदयभानु सिंह
2. तुलसी क साधना-आचार्य वि नाथ साद मि
3. गो वामी तुलसीदास- आचार्य रामचं शु ल
4. घनानंद और व छंद का -धारा-डॉ. मनोहर गौड
5. घनानंद का का -डॉ. रामदेव शु ल
6. घनानंद का का -शि प- डॉ. लखनपाल सिंह

तावना- किसी भी रचना के विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्दिष्टन के लिए का शा और साहित्यालोचन का अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य का परख हो सकती है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का वाद करने तथा रचना को उसके समस्त समझने के लिए पाठ का शा का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित -

ईकाई-1 1. लेटो - का -सिंता।

2. अरतू - अनुकरण-सिंता।

3. लजाइनस - उदाहृत अवधारणा।

ईकाई-2 1. इडन के का -सिंता।

2. वसर्वर्थ -का -भाषा का सिंता।

3. कॉलरज -कपना-सिंता और ललित-कपना।

ईकाई-3 1. मैयू आर्नड -आलोचना का विषय और कार्य।

2. टी.एस.इलियट-परंपरा के परिकल्पना और वैयक्तिकता, निव्यक्तता का सिंता, वतुनि समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

3. आई.ए. रचर्स - रागात्मक अर्थ, संवेग का संतुलन, आवहारात्मक आलोचना।

ईकाई-4 1. सिंता और वाद-अभिजातवाद, व छंदतावाद, अभिजातवाद, मासवाद, मनोविश्लेषणवाद तथा अतिवाद-सामाजिक परिकल्पना व विशेषताएँ।

2. आधुनिक समीक्षा के विशिष्ट वृत्तियाँ-संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उर आधुनिकतावाद-सामाजिक परिकल्पना व विशेषताएँ।

अंक-विभाजन-

3 आलोचनात्मक - ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 टिप्पणी पर आधारित- ईकाई 4 से (दो टिप्पणी) (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तक-

1. अरतू का काशा -डॉ.नगे
2. कासम उदाहृत व-डॉ.महे चतुर्वदी
3. उदाहृत के बारे में-डॉ.निर्मला जैन
4. पाठ का शा के परंपरा-डॉ.नगे
5. पाठ का शा -डॉ.भगीरथ मिश्र
6. मासवादी, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना-डॉ.शशिभूषण पांडेय (राधाकृष्ण काशन, नई दिल्ली)
7. पाठ का साहित्य-चितन-संपा.निर्मला जैन, कुसुम बाँठिया (राधाकृष्ण काशन, नई दिल्ली)
8. कार्ल मार्क्स-कला और साहित्य-चितन-संपा.डॉ.नामवर सिंह
9. उर आधुनिकता और उर संरचनावाद-सुधीश पचौरी (हिमाचल काशन भंडार, दिल्ली)
10. उर आधुनिकता-कुछ विचार-संपा.देव शंकर नवीन तथा मिश्र (वाणी काशन, दिल्ली)
11. देरदा का विखंडन और साहित्य-सुधीश पचौरी (आधार काशन, पंचकूला, हरियाणा)
12. उर आधुनिकता:साहित्यिक विमर्श-सुधीश पचौरी
13. शासवादी और व छंदतावादी साहित्य-यादृश और समीक्षा-णाली-पी.वासवदाता (वराज काशन)

तावना- भाषा के योजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकता और जीवन-व्यवहार से है और विभिन्न परक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा मायम के प्रामाण्य होती है। उद्युक्त आधुनिक काल में जीवन और समाज के विभिन्न आवश्यकता और दायित्व के पूरक के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार के उपयोग के जानेवाली योजनमूलक हिंदी के विविध आयाम का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

अध्ययन के लिए निर्धारित -

ईकाई-1 मीडिया लेखन

1. जनसंचार- वैज्ञानिक एवम् चुनौतियाँ।
2. विभिन्न जनसंचार मायम का व्यवस्थापन, दृश्य-श्रवण, इंटरनेट।

ईकाई-2 मीडिया लेखन

1. मायम (रेडियो) मौखिक भाषा का कृति, समाचार-लेखन एवम् वाचन, रेडियो नाटक। उपरोक्त लेखन, विज्ञापन-लेखन, फंक्शन तथा रपोर्ताज।
2. दृश्य-श्रवण मायम (फ्लिम, टेलीविजन एवम् वीडियो), दृश्य मायम में भाषा का कृति, दृश्य एवम् सामग्री का सामंजस्य, पाठ्य वाचन (वायस ओवर), पटकथा-लेखन, टेली-विज्ञापन-डॉक्यूमेंट्री, संवाद-लेखन, साहित्यिक विधा का दृश्य मायम में प्रस्तुत, विज्ञापन का भाषा।
3. इंटरनेट- सामग्री सृजन।

ईकाई-3 अनुवाद - सिंहांत एवम् व्यवहार

1. अनुवाद का व्यवस्थापन, विधि, एवम् विधि।
2. हिंदी का योजनीयता में अनुवाद का भूमिका।
3. कार्यालयी हिंदी और अनुवाद।

ईकाई-4 त्वहा रक -अनुवाद-अव्यास

1. त्वहा रक -अनुवाद-गुजराती या अंग्रेजी से हिंदी में।
2. कार्यालयी अनुवाद- कार्यालयी एवम् शासनिक शिदावली, शासनिक युक्तियाँ, पदनाम, विभाग।
3. पदनाम, अनुभाग, दत्तावेज, तिवेदन के अनुवाद।
4. सारानुवाद।

अंक विभाजन-

- 3 आलोचना मक - ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)
- 1 त्वहा रक अनुवाद तथा शासनिक शिदावली - पदनाम पर आधा रत, ईकाई-4 से (18 अंक)

संदर्भ-पुस्तक-

1. योजनमूलक हिंदी: सांगिकता एवम् प्रदृश्य-डॉ.सु.नागल मी (जवाहर पुस्तकालय, मथुरा)
2. योजनमूलक हिंदी-कनल कुमार बोस (लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली)
3. हिंदी प्रकाशिता-कृष्ण बिहारी मिश्र (भारतीय प्रिंसीपल, दिल्ली)
4. योजनमूलक हिंदी:संरचना एवम् अनुयोग-डॉ.राम काश एवम् डॉ.दनेशगु (राधाकृष्ण काशन, नई दिल्ली)
5. योजनमूलक हिंदी और प्रकाशिता-डॉ.दनेश साद सह (वाणी काशन, दिल्ली)
6. योजनमूलक हिंदी-विनोद गोदरे (वाणी काशन, दिल्ली)
7. योजनमूलक हिंदी:सिंहांत और योग-दंगल झाटे (वाणी काशन, दिल्ली)
8. मीडिया-लेखन-डॉ.चं.काश मिश्र (संजय काशन, दिल्ली)
9. त्वहा रक अनुवाद-डॉ.एन.ई.विनाथ ऐयर
10. अनुवाद-विज्ञान-डॉ.भोलानाथ तिवारी
11. अनुवाद-बोध-डॉ.गाग गु
12. अनुवाद-व्याख्या एवम् प्रदृश्य-डॉ.रीतारानी पालीवाल (वाणी काशन, दिल्ली)
13. दूरदर्शन का भूमिका-सुधीश पंचौरी
14. जनसंचार-विविध आयाम- जमोहन गु
15. मीडिया और साहित्य-सुधीश पंचौरी

तावना- आधुनिक हृदी का नवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरत आ। उसी शताब्दी के उत्तरार्ध में इसमें नवीन संवेदनाएँ, भावनाएँ तथा नवीन विचार अभिव्यक्त हुए हैं। इसका विविध धाराएँ हैं। इसलिए संवेदना तथा मानसिक विचार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक तथा प्रासंगिक है।

1. धर्मवीर भारती - कनुविया (काशक- भारतीय जनपीठ, नई दिल्ली)

2. हरवंशराय बन- मधुशाला

अध्ययन के लिए निर्धारित -

ईकाई-1 हालावादी कविता: वर्तक और विशेषताएँ।

ईकाई-2 वातंयोर हृदी बंध-का

हृदी कृष्ण-का: उदय और विकास।

ईकाई-3 कनुविया

1. धर्मवीर भारती: विव और कृतिव।

2. 'कनुविया': काव्य-वर्णन।

3. 'कनुविया' में आधुनिक-बोध-अतिववादी वणवादी-जीवन-दर्शन।

4. आधुनिक हृदी बंध-का में 'कनुविया' का स्थान।

5. 'कनुविया': कनु और राधा का चरित्र।

6. 'कनुविया': बंध-कौशल।

ईकाई-4 मधुशाला

1. बन: जीवन-परिचय व रचनाएँ।

2. बन के मनक मादकता: 'मधुशाला'।

3. मती: 'मधुशाला' का मूल वर।

4. 'मधुशाला' में अभिव्यक्ति भाव।

5. 'मधुशाला' में मतीका मकता।

6. 'मधुशाला': कला-परिचय।

अंक विभाजन:

3 आलोचना मक -ईकाई 1-2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 टपणी व संसंदर्भ टाया का (हरेक पु तक से एक-एक) ईकाई 3 और 4 पर आधारित (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. धर्मवीर भारती: युग-चेतना और अभिव्यक्ति -डॉ.सरताशुला (चतन काशन, कानपुर)

2. धर्मवीर भारती: अनुभव और अभिव्यक्ति -ल मणद गौतम (भारत पु तक भंडार, दिल्ली)

3. नई कविता के तिमान-ल मीकांत वर्मा (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)

4. कविवर बन के साथ-अजितकुमार (भारतीय जनपीठ, दिल्ली)

5. बन: विव और कृतिव-जीवन काश जोशी (स मार्ग काशन, दिल्ली)

6. बन: विव और कृतिव-संपादक: बाँके बिहारी भटनागर (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली)

7. हालावाद और बन- डे.दशरथ राज (महाराष्ट्र भाषा सभा, पुणे)

अथवा

तावना- छायावाद हृदी के आधुनिक काल क कविता क एक नूतन और मौलिक उपलब्धि है। इसमें कविय ने अपनी वानुभूतिक अभि िक है। ेम, कृति और अ या म इसके मु य विषय रहे ह। शैली इसक नवीन है। साद, पंत, महादेवी वर्मा और निराला इसके मील- तंभ ह। छायावाद के बिना हम इस शता दी क धड़कन को समझने म असमर्थ ह गे। अतः इसका अ ययन-मनन ब त ही ासंगिक एवम् अनिवार्य है।

1. महादेवी - निहार (काशक- लोकभारती, इलाहाबाद)
2. रामकुमार वर्मा - एकल

अ ययन के लिए निर्धारित -

ईकाई-1 1. छायावाद के उ व व पतन के कारण।

ईकाई-2 1. छायावाद का ऐतिहासिक मह व।

2. हृदी साहि य म छायावाद का थान।

ईकाई-3 निहार

1. महादेवी वर्मा: प रचय।

2. 'नीहार' म कौतूहल मि ित वेदना क अभि ि।

3. छायावादी रचना के प म नीहार।

4. 'नीहार' म ेम एवम् कृति-वर्णन।

5. 'नीहार' म रह यवादी भावना।

6. 'नीहार' का का -सौ व।

ईकाई-4 एकल

1. रामकुमार वर्मा- ि व और कृति व।

2. 'एकल ' का का - व प।

3. 'एकल ' म अभि त कालीन राजनीति।

4. 'एकल ' क पा -सृि।

5. 'एकल ' म रस-योजना व कृति-चि ण।

6. 'एकल ' का कला-प ।

अंक विभाजन:

3 आलोचना मक -ईकाई 1 -2 से एक, ईकाई 3 और 4 से एक-एक से (52 अंक)

1 ट पणी व ससंदर्भ ा या का (हरेक पु तक से एक-एक) ईकाई 3 और 4 पर आधारित (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. छायावाद-डॉ. नामवर सिंह (राजकमल काशन, नई द ली)
2. छायावाद के आधार तंभ-गंगा साद पा डेय (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
3. महादेवी-इ नाथ मदान (राधाकृ ण काशन, नई द ली)
4. महीयसी महादेवी-गंगा साद विमल (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
5. महादेवी-डॉ. परमानंद िवा तव (लोकभारती काशन, इलाहाबाद)
6. डॉ. टर रामकुमार वर्मा: अभिन दन थ (भारती-प रषद्, याग)

सूचना िे गिक के इस युग म इलै िनिक मीडिया क भूमिका अ यंत मह वपूर्ण हो गयी है। हदी भाषा और साहित्य का इन मा यम म अधिकाधिक तरीय योग तभी हो सकता है जब इन दृ य- मा यम ले संबंधित विधा का वथित शि ण ा कर लिया जाए। यह पा म रोजगारपरक है।

अ ययन के लिए निर्धारत े -

- ईकाई-1 मा यमोपयोगी लेखन का व प और मुख कार।
हदी मा यम लेखन का संि इतिहास।
हदी के सम आधुनिक जनसंचार और सूचना िे गिक क चुनौतियाँ।
- ईकाई-2 रेडियो नाटक क विधि।
रंगनाटक, पा नाटक और रेडियो नाटक म अतर।
रेडियो नाटक के मुख भेद-रेडियो धारावाहिक, रेडियो पांतर, रेडियो फे टेसी, संगीत पक,
आलेख पक (डॉ यूम ि फ चर)।
- ईकाई-3 टी.वी. नाटक क तकनीक।
टेली ामा, टेली फ म, डा यू ामा तथा टी.वी.धारावाहिक म सा य-वैष या
संचार मा यम के अ य विविध पा।
साहित्यिक विधा क दृ य- पांतरण-कला।
- ईकाई-4 इलै िनिक मीडिया ारा सा रत समाचार के संकलन-संपादन और तुतीकरण क विधि।
संचार मा यम ारा सा रत वि ापन क भाषा।
वि ापन फ म क विधि।
संचार मा यम क भाषा।

अंक विभाजन-

3 आलोचना मक - ईकाई 1, 2 और 3 से एक-एक (52 अंक)

1 ट पणी का - ईकाई 1-2-3 से एक और ईकाई 4 से एक (दो ट पणियाँ) (18 अंक)

संदर्भ-पु तक-

1. मीडिया-लेखन-डॉ. चं काश मि (संजय काशन, द ली)
2. दूरदर्शन क भूमिका-सुधीश पचौरी
3. जनसंचार-विविध आयाम- जमोहन गु
4. मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
5. रेडियो और दूरदर्शन प का रता-डॉ. हरमोहन
6. ेक के बाद-सुधीश पचौरी
7. मीडिया और बाजारवाद-रामशरण जोशी (राधाकृ ण काशन)
8. फ चर लेखन: व प और शि प-डॉ. मनोहर भाकर (राधाकृ ण काशन)
9. समाचार संपादन-कमल दीित, महेश दर्पण (राधाकृ ण काशन)
10. टेलीविज़न कार्य म निर्माण या-महाराज शाह (भात काशन, नई द ली)
11. भारतीय इलै िनिक मीडिया-देव त सह (भात काशन, नई द ली)
12. इलै िनिक मीडिया-पी.के.आर्य (भात काशन, नई द ली)

M.A. DEGREE COURSE HINDI

2ND SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 6 ाचीन एवम् म यकालीन का Core Course-4	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -7 पा ाय का शा एवम् साहि यालोचन Core Course-5	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER -8 योजनमूलक हिदी Core Course-6	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
4	PAPER- 9 आधुनिक हिदी का Elective Course-2	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER- 9 छायावाद Elective Course-2	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
6	PAPER -10 दृ य- ा मा यम लेखन Multi Disciplinary Course-2	70+30=100	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-2	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02
8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each				Each Day 5 th Hour can be used for seminar/presentation ect.
Tuesday	Semester.				
Wednes	Four Hours for each course per week				
Thursday	Total teaching hours per week=20				
Friday					
Saturday	Self Study Course				